भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत

(लघुशोध-आलेख)

लेखक
डॉ0 लक्ष्मी शंकर यादव
प्रवक्ता, डायट–लोहाघाट, चम्पावत, उत्तराखण्ड
ई–मेलः
isyadav.dietlohaghat@gmail.com,
श्रीमती आराधना कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास विभाग, महिला सेवा सदन डिग्री कालेज, प्रयागराज
ई–मेल : draradhana14@gmail.com

सारांश(Abstract):– 'कोस–कोस पर पानी बदले चार कोस वे वानी' भारत अपनी अनूठी भौतिक, आर्थिक और सामाजिक विशिष्टताओं के कारण प्राचीन काल से विश्व में अलग पहचान रखता आया है। भारतीय संस्कृति ने सभी सर्वोत्कृष्ट तत्वों को अंगीकार और आत्मसात किया जिसका स्पष्ट प्रभाव भारतीय संस्कृति में आध्यात्म और भौतिकवाद के अद्भुत समन्वय रूप में देखा जा सकता है।

'युग–युग' के संचित संस्कार, ऋषि–मुनियों के विचार, धीरो–वीरों के व्यवहार है निज संस्कृति के शृंगार' भारत ने पूर्वजों से विरासत में ईंट–चूना नहीं वरन् प्राचीन मेला, जड़ी–बूटियाँ, पर्व–त्योहार, परिधान–व्यंजन, भाषायें, विचार, रीति–रिवाज़, ध्यान–योग, शिल्प–मूर्तियाँ, स्थापत्य, साहित्य–काव्य, नृत्य–संगीत वैज्ञानिक–आविष्कार, खोज गठित भूगोल–खगोल विद्या, ज्योतिष पंतजलि को पाया।

बीज शब्द– कोस, वानी, धीरो, स्थापत्य, खगोल, उल्लास

'कोस–कोस पर पानी बदले चार कोस वे वानी'

भारत अपनी अनूठी भौतिक, आर्थिक और सामाजिक विशिष्टताओं के कारण प्राचीन काल से विश्व में अलग पहचान रखता आया है। भारतीय संस्कृति ने सभी सर्वोत्कृष्ट तत्वों को अंगीकार और आत्मसात किया जिसका स्पष्ट प्रभाव भारतीय संस्कृति में आध्यात्म और भौतिकवाद के अद्भुत समन्वय रूप में देखा जा सकता है।

'युग–युग' के संचित संस्कार, ऋषि–मुनियों के विचार, धीरो–वीरों के व्यवहार है निज संस्कृति के शृंगार' भारत ने पूर्वजों से विरासत में ईंट–चूना नहीं वरन् प्राचीन मेला, जड़ी–बूटियाँ, पर्व–त्योहार, परिधान–व्यंजन, भाषायें, विचार, रीति–रिवाज़, ध्यान–योग, शिल्प–मूर्तियाँ, स्थापत्य, साहित्य–काव्य, नृत्य–संगीत वैज्ञानिक–आविष्कार, खोज गठित भूगोल–खगोल विद्या, ज्योतिष पंतजलि को पाया।

भारत में प्रत्येक प्रांत के प्रत्येक ग्राम की माटी में लोक नृत्य अपनी विशिष्ट लय और ताल की सुंगंध को संजोये हुए हैं जिसमें उल्लास है, खुशहाली है जो अपने विचारों को विशिष्ट शैली भाषा और परिधान के माध्यम से व्यक्त करते हैं इसमें खुशी के स्वरों में पाँव स्वतः थिरकने लगते हैं सब कुछ तालबद्ध हो जाता है। प्रत्येक राज्य का अपना लोक गीत और नृत्य है जो विभिन्न संस्कारों, फसलों की रोपाई–कटाई में हर्षोउल्लास को प्रकट करती है जैसे–केरल में ओणम्, तमिलनाडु में पोंगल, महाराष्ट्र में गणेश चतुर्थी, ओडिशा में रथ यात्रा, बंगाल में दुर्गापूजा, उत्तराखण्ड में फूलदेई, पंजाब में बैसाखी जो लोक कलाओं, गीतों, नृत्य, ड्रामा का अद्भुत संयोजन है। वहीं करमा नृत्य गोंड, बैगा, औरो जनजातियों द्वारा किया जाने वाला बसंत उत्सव, गरबा, नृत्य नवरात्रि का उत्सव, राजस्थान का घूमर, असम का बिहू, पश्चिम बंगाल का संथाल, पंजाब का भांगड़ा तथा कलारिपट्टूँ और चऊ युद्ध नृत्य है।

भारत की प्राचीन विशिष्ट स्थापत्य और नगरीय सभ्यता सिन्धु घाटी अपने निर्माण कौशल और अत्याधुनिक निकासी प्रणाली योजनाबद्ध पथ, इसके अतिरिक्त अनेकों मंदिर, स्थापत्य और विज्ञान के ऐसे आश्चर्यजनक उदाहरण है जो सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है फिर वह खजुराहो में मूर्ति शिल्प का अद्भुत कार्य हो या बिहार के महाबोधि मंदिर में ईंटो द्वारा की गयी सजावट, तमिलनाडु का बृहदेश्वर मंदिर जहाँ नृत्यांगनाओं की भावमयी मुद्रा में भरतनाट्यम नृत्य है। जिनसे स्पष्ट झलकता है कि भारतीय दर्शन में ललित अनुभवों और सौन्दर्य को महत्व दिया गया है जिस कारण कला जीवंत हो उठती है। स्तूप चैत्य विहार तथा पहाड़ियों को काटकर बनायी गयी गुफाओं की दीवारों पर की गयी चित्रकारी भित्ती चित्रों और मूर्तियों की अनुपम कलाकारी का समन्वय है इमनें हाथी, शेर, मयूर तथा पक्षियों की मूर्तियों के झरोखे बनाये गये हैं। इसी क्रम में भारतीय और इस्लामिक शैली के मिश्रण से बनी गंधार शैली की विषयवस्तु भारतीय है एवं इसमें बुद्ध एवं बोधिसत्व की मूर्तियों का निर्माण किया गया वहीं मथुरा शैली आदर्शवादी कला का प्रतिनिधित्व करती है।

इस प्रकार भारत की लोक और जनजातीय कलाओं में धार्मिक और आध्यात्मिक चित्रों को उभारा जाता है ये बहु पारम्परिक और सजीव प्रभावशाली होती है। इनसे देश की समृद्ध विरासत का अनुभव होता है भारत की सर्वाधिक प्रसिद्ध जनजातिय और लोक कलाएं हैं–बिहार की मधुबनी, ओडिशा की पट्टीचित्र, आन्ध्र प्रदेश की निर्मल चित्रकारी, राजसी विरासत वाले धार्मिक चित्र जिसे तंजौर (तंजावर) चित्रकारी, महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला, राजस्थानी लघु चित्रकारी अथवा राजपूत चित्रकारी, आन्ध्र प्रदेश की कलमकारी करेल की कालमेजुधु इसके अतिरिक्त मंडाना भूमि अंलकरण, रंगोली, अल्पना आदि है। भारतीय संस्कृति का दूसरी संस्कृतियो के सम्पर्क में आने से एक–दूसरे से सीखने से अलग–अलग शैलियों का संयोग हुआ इस विकास से नवीनता और सांस्कृतिक समृद्धि आयी जैसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख्याल, कव्वाली, सूफी और लोक शैलियों का प्रयोग हुआ वही अवध के नवाब वाजिद अलीशाह ने ठुमरी गायन को कथक नृत्य से जोड़ा तो बालुस्वामी दीक्षितार आयरिश ने वायलिन को कर्नाटक संगीत से जोड़ा यही कारण है कि भारतीय नृत्य–संगीत पवित्रता और एकाग्रता के कारण आत्मा को स्पर्श करता है जिससे मानव मन भाव–विभोर हो जाता।

भारत में आज भी सदियों से चली आ रही कठिन और गूढ़ वाचन व्यवस्था के कारण गोथा गायको ने वेद–उपनिषद, लोक–साहित्य और लोक गीतों को संरक्षित रखा है। यह लोक गाथाएं नानी–दादी से बच्चों तक अर्थात् एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संरक्षित रूप से स्थानान्तरित होती रही है जिसमें नानी–दादी की कहानियाँ, कीर्तन, बाउल गीत आदि।

भारत अपनी हस्त शिल्पकला को हुनरमंद और सृजनशील कलाकारों के कारण पीढ़ियों से संजोये हुए हैं। ये कलाकार अपने हस्तशिल्पों में पौराणिक कथाओं, विश्वासों को प्रदर्शन करने के साथ–साथ समाज की परम्पराओं को भी दर्शाते हैं जैसे मलमल, पटोला, बंधेज, इक्कत, फूलकारी चिकनकारी के वस्त्र, पश्मीना शॉल कालीन, काँच, हाथी दाँत, लकड़ी, बाँस तार कागज से निर्मित वस्तुयें हस्तशिल्प व दस्तकारी के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इस प्रकार भारत पीढ़ियों से अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोजे हुए है।

सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास–''यहाँ की मिट्टी में ऐसा कुछ अनोखा है जो इतनी कठिनाईयों के बावजूद यह महान विभूतियों की धरती रही है।''

सरदार वल्लभ भाई पटेल

भारत ने अभाव और कमी का लम्बा सफर तय किया है किन्तु आज वह विश्व की उभरती हुई शक्तियों में गिना जा रहा है। भारत आज़ादी का 75वां वर्षगाँठ 'अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहा जिसके फलस्वरूप सरकार द्वारा विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के मध्य भाषा, साहित्य, भोजन, त्यौहार, पर्यटन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आदान–प्रदान के साथ विविधता में एकता का अद्भुत संयोग भारत की समृद्ध विरासत को दर्शाता है। सरकार द्वारा किये जा रहे 'अमृत महोत्सव' का उद्देश्य–

देश के लोगों के मध्य पारम्परिक रूप से विद्यमान भावनात्मक बंधन को मजबूत करना।

भारत देश की समृद्ध विविधता और परम्पराओं, रीति–रिवाजों को समझना।

एक–दूसरे से सीखने का वातावरण।

कला के क्षेत्र में नए अनुसंधान कर कलात्मक धरोहर को संरक्षण प्रदान करना।

निष्कर्ष– इस विश्व में सच्चा आनंद मुनष्य के सही इहलौकिक लक्ष्यों में निहित है और सच्च आनंद आत्मा, मन और शरीर के बीच स्वाभाविक समन्वय स्थापित करने और उसे बनाए रखने में है। किसी संस्कृति का मूल्यांकन इस बात से होता है कि उसने सामंजस्य की इस स्थिति को प्राप्त करने और अपने अभिव्यंजनात्मक उद्देश्यों और गतिविधियों के सही माध्यमों को किस सीमा तक खोज लिया है।''–महर्षि अरविन्द

भारत रीति–रिवाजों परम्पराओं, उत्सव, प्रकृति और समूचे ब्रह्माण्ड से सम्बन्धित परम्पराओं और पारम्परिक हस्तशिल्प जैसी चीज़ों को विरासत में पाया है। इस प्रकार भारत का प्रत्येक राज्य, प्रत्येक क्षेत्र किसी खास संस्कृति या धर्म से जुड़ा उत्सव मनाता है।

भारत आज एक बदलाव से गुजर रहा है जिसमें सरकार अकेले कार्य नहीं कर सकती इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का उपयोग संस्कृति को सहेज कर रखने के लिए करें स्थानीय उत्पाद, भारत की आध्यात्मिक सांस्कृति धरोहर जो समुदायों या धर्मों में विद्यमान है इसके साथ ही शहरी और ग्रामीण अन्तर को मिटाने का प्रयास करना चाहिए।

----------00--------

संदर्भ सूची

1- सम्पादीय, 2020 अगस्त, 'संस्कृतियों का संगम' नई दिल्ली योजना, पृ0–5
2- विकास स्तम्भ, 2020 अगस्त 'एक भारत श्रेष्ठ भारत', नई दिल्ली योजना।
3- सम्पादकीय, 2021, जनवरी, 'भारत व 75' नई दिल्ली योजना, पृ0–5
4- नायडु, एम. वेंकैया, 2021 जनवरी, 'स्वतंत्रता के 75 वर्ष', नई दिल्ली, योजना, पृ0– 6–8
5- मिश्रा, अविनाश, सिन्हा शर्मिष्ठा, 2021 अप्रैल, 'भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत', नई दिल्ली, कुरुक्षेत्र।
6- मेनन हेमंत, 2021 अप्रैल, 'भारतीय लोककला और संस्कृति का संरक्षण जरुरी', नई दिल्ली, कुरुक्षेत्र।

----------00--------